**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(4): 208-210
Received: 11-09-2020
Accepted: 18-10-2020

**भागिरथ चौधरी**
हिन्दी विभाग, एम0 एम0 टी0 एम0 कॉलेज, दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**भागिरथ चौधरी**
हिन्दी विभाग, एम0 एम0 टी0 एम0 कॉलेज, दरभंगा, बिहार, भारत

# मिथिला की लोकगाथाओं में शौर्य और श्रृंगार

**भागिरथ चौधरी**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/27068919.2020.v2.i4d.353

**सारांश**
साहित्य में लोककथाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। लोककथाएँ हमारी सांस्कृति के साथ–साथ प्रेम, श्रृंगार, शौय आदि को भी उद्भासित करती है। लोकगाथाओं में गोपीचंद और नैका बनिजारा की गाथा को छोड़ शेष गाथाओं के नायकों का शौर्य जन कल्याण की भावना तथा मंगलमय कामना के रूप में प्रस्फुटित है। गाथाओं के नायक गण में सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया की भावना ही शौर्य रूप में दृष्टिगोचर होता है। वहीं गाथाओं की नायिकाएँ अपने सुन्दर चरित्र तथा प्राकृतिक सौन्दर्य में ही मोहक और आर्कषक दिख पड़ती हैं। वह भारतीय परम्पराओं का मर्यादा पूर्वक पालन करती हुई सीमा के अंदर ही रहती हैं। समय आने पर वह अपने प्रभुत्व से देवताओं को भी झूका देती हैं। इस तरह यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि मिथिला की लोकगाथाओं में वर्णित शौर्य और श्रृंगार वर्तमान और भविष्य के लिए संबल और पाथेय सिद्ध हो सकता है।

**मुख्य शब्दः** लोकगाथा, शौर्य और श्रृंगार

**प्रस्तावना**

साहित्य का एकनाम रस संचयन है। अभिधेय लोक साहित्य का आधार भी रस संचयन ही है। लोक साहित्य की अनुपम विधा लोकगाथा मुख्यतः गेयात्मकता ही होती है। गेयात्मकता के कारण हीं लोक गाथा पुरातन से लेकर अधुनातन तक लोक कण्ठ में सुरक्षित है, जिसमें कथा–तत्व तथा गेय का सुंदर सम्मिश्रण मिलता है। इसका नायक धीरोदात्त नहीं होता, बल्कि लोकनायक होता है, जो इतिहास प्रसिद्ध भले न हो, परन्तु उनकी ऐतिहासिक उपस्थिति संदिग्ध नहीं होती। यही लोक नायक अपने शौर्य, पराक्रम तथा जन–कल्याण करने के कारण कालान्तर में लोक देवता के रूप में प्रतिष्ठित और पूजित है। मैथिली लोकगाथाओं में सभी रसों का संयोजन देखने को मिलता है, लेकिन श्रृंगार और वीर–रस प्रमुखता से उद्घाटित हुआ है, अपने शौर्य एवं पराक्रम से जनता करे अत्याचारी तत्वों से मुक्त कराकर अभय दान देना लोक गाथाओं के लोकनायकों का वैषिष्टय् रहा है।

अमर सिंह लोकगाथा का नायक स्वयं अमर सिंह है, जिन्होंने बदिला चमार के आतंक से आतंकित ब्राह्मण वाला 'कमला' को त्राण दिलाया। समाज बदिला के कुकृत्य से तंग आ चुका था, धर्म पर आधात हो रहा था। बहु–बेटी अपने को असुरक्षित महसूस कर रही थी इसी समय में अलौकिक शक्ति संपन्न अमर सिंह का जन्म होता है। कुछ दिन के बाद कातर कमला 'अमर सिंह' से याचना करती है कि वह बदिला से त्राण दिलावे। अमर सिंह प्रतिज्ञा करता है और मोरंग स्थित बदिला चमार के घर पहुँच बदिला को युद्ध के लिए ललकारता है और अपनी छूरी से बदिला का सिर काट उसके दरवाजे पर लटका देता है।

अमर सिंह लोक गाथा में शौर्य की पराकाष्ठा तब देखने को मिलती है जब बदिला का तत्क्षण जन्मा पुत्र 'पिछड़ामल' अमर सिंह जैसे योद्धा से सात दिन और सात रात्रि तक लगातार युद्ध करता है, अंत में कमला की सहायता से उसे मारने में अमर सिंह सफल हो जाता है। अमर सिंह के शौर्य के आगे श्रृंगार फीका पड़ जाता है। नव विवाहिता जो श्रृंगारों से सुसज्जित है, किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख उपलब्ध नहीं कराता क्योंकि अत्याचारी का नाष करना उनकी प्रथम प्राथमिकता थी।

मैथिली लोकगाथा में कारिख पंजियार का स्थान अमिट है। कारिख सम्पूर्ण मानव कल्याणार्थ इस धरा–धाम पर आये थे। वे केवल अपने पराक्रम से अत्याचारियों का अंत ही नहीं किया, अपितु अपने दैवीय प्रभाव से कुष्ठ रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को भी चंगा किया। बाल्यावस्था में ही लोगों के मना करने के बावजूद वे शैला नदी में स्नान करने जाते हैं और कृष्ण की तरह नदीं में रह रहे नाग–नागिन को कुष से नॉथकर बाहर निकाल देते हैं।

सोखा की सहायता से कारिख मीरा सुल्तान को परास्त करता है, विजलपुर के राजा का उद्धार करते हुए कामरू राज के नैना–पनमा जोगिन को मजा चखाता है। जिवछी तेलिन का कल्याण करता है। केदरी वन पहुँचकर पिता का उद्धार करता है। कारिख लोकगाथा में श्रृंगार का सौष्ठव है।

विवाहोंपरान्त जब कारिख पत्नी को छोड़ जनकल्याण हेतु निकलना चाहता है उस समय वियोग श्रृंगार निम्न में व्यक्त हुआ है। गौना का अभी चार ही दिन हुआ है। हाथ का कगंन भी नहीं टूटा है। जैसे राम ने सीता से अपने साथ जंगल जाने से मना किया था उसी तरह कारिख भी पत्नी को अपने साथ चलने से मना करते हैं, लेकिन उनकी पत्नी कहती हैं अगिया लेगेबे हो सामीनाथ, माय वापक रजबा बजर खसैबै जेठ भाई सोरठी में रोमांचक तत्व के साथ–साथ पतिव्रत धर्म के उज्जवल रूप को हीं दिखलाया गया है फिर भी उसमें शौर्य के लक्षण देखने को मिलता है। राजा रूण्डमाल को सन्तान सुख की प्राप्ति हेतु कटक की राजकुमारी सोरठी से विवाह आवष्यक था और कटक का मार्ग बड़ा ही दुर्गम था, लेकिन रूण्डमाल का भानजा वृजभान साहस और बुद्धि का परिचय देते हुए सोरठी को लाने में सफल हो जाता है। वृजभान एक कर्मठ योगी और गुरू का परम भक्त है। सती स्त्रियों के जीवन का उद्धार करना ही उनकी साधना थी। ''वह अपने कर्त्तव्यों से समस्त समाज को सुखीकर अवधुत के समान सदा के लिए चल देता है, वास्तविक अर्थ में वह एक योगी है।

केवल महाराज के समय सामंतो का प्रभुत्व था। जन सामान्य से बेगार करवाना उनकी नियति थी। जो कोई भी व्यक्ति सामंत का बेगार नहीं करते, सामंत उसे कारागार में डाल देता। इस तरह सामंत के कैद खाने में 700 मल्लाह कैद थे, जिन पर अत्याचार किया जा रहा था। इसकी जानकारी जब केवल महाराज को हुई, वे अपने रण–कौषल से शौर्य, साहस और बल के आधार पर अत्याचारी सामंत का समूल नाष कर सात सौ बेगुनाहों को मुक्त कराता है। अत्याचारी की चुनौती को स्वीकार करने के लिए वह हमेषा विभिन्न बाधाओं, विभिन्न अपषकुनों के होने के बाबजूद भी वह खेमटी नदी की ओर चल पड़ता।

गांगो गोढ़िन लोक देवी है। देवी के कारण उनमें पराक्रम होना स्वाभाविक है। एक दिन गांगो पानी लाने के लिए यमुना तीर पहुँचती है, तब देखती है कि बड़ी–बड़ी रंग–बिरंगी मछलियॉ इधर से उधर जा रही है। मछली को देखकर उसे मछली मारने की इच्छा होती है। वह घर आती है और अपने श्वषुर, पति एवं जेठ को मछली मारने हेतु विदा करती है।

श्वषुर और जेठ के जाल में मछली नहीं फँस पाती। गांगो आती है और पति से कहती है मेरा नाम ले के जाल फेकिये तदुपरान्त बड़ी–बड़ी मछलियॉ फॅस जाती है। इसमें उनके चमत्कारिक रूप का दर्षन होता है। गांगो के विवाह प्रकरण में श्रृंगार का वर्णन मिलता है। विवाहिता विभिन्न आभूषणों को धारण कर ससुराल जाती है। गांगो भी पिता और भ्राता के दिये हुए आभूषणों को पहन कर ससुराल आती है।

गंगो की सास, गांगो लोक–व्यवहार एवं नित्य कर्म की जब षिक्षा देती है तो उसमें श्रृंगार का सुंदर संयोजन देखने को मिलता है।

कीर्त्ति सिंह के नाम से विख्यात जय सिंह में शौर्य बचपन में ही चमकने लगा था। इनके शौर्य से कमला प्रभावित हो उसे अपना सेवक बनाने के लिए एड़ी–चोटी एक कर देती है। वह देवी कमला के गह्वर को तहस–नहस कर देता है। हिरणी नदी की धारा को रोक देता है और तत्पष्चात् कमला की कैद से पिता को छुड़ा लेता है।

तदुपरान्त कमला का सेवक बन कमला की प्रेरणा से मोरंग के हड़वा (बदिला) चमार के आतंक को समाप्त कर सात सौ मल्लाह परिवार को लेकर लालपुर गॉव में बस जाता है। कमला के सहयोग से ही जय सिंह मुसलमान पीर का भी अंत करता है।

दुलरा दयाल का शौर्य जादूगरनी सास बहुरा ठकुराइन के जादू को नष्ट करने के क्रम में दिखलाई देता है। दुलरा दयाल ने कमरू–कामख्या के शक्ति पीठ आश्रम में षष्ठ चक्र तंत्र की षिक्षा कामा जोगिनी जो साधिका थी उनसे अपनी बुद्धि और चतुराई से प्राप्त की। इस क्रम में कई बार योगिनी द्वारा पथ भ्रष्ठ करने का प्रयास भी हुआ, मुदा दयाल सिंह अपने पथ पर अडिग रहे। कामायोगिनी को अपनी नृत्य कला से प्रसन्न कर धरती चक्र, स्वाधिस्थान चक्र तथा मणिपुर चक्र एवं तंत्र–नृत्य में पारंगत हुए। इस संबंध में डॉ. ब्रज किषोर वर्मा मणिपद्म का कथन है–

दुलरा एकटा कलामय व्यक्ति छथि। ओ समस्त पूर्वांचल, मिथिला कामरूप बंग आ उत्कलक नृत्य विधा में निष्प्राण छथि। हुनक नृत्य तंत्र पर आधारित सिद्ध नृत्य अछि। कामा जोगिनी से तंत्र विद्या ग्रहण करने बाद साखा ग्राम के भुवन मोहनी राजा जोधी सामन्त की पुत्री से आगे की विद्या सीखीं। इसी बीच साखा ग्राम में उत्पन्न समस्या का समाधान भी किया तथा राज कुमारी भुवन मोहिनी के साथ नृत्य कर टंका नामक राक्षस का संहार किया इनके प्रभाव एवं पराक्रम को देखकर यात्रा से वापसी वक्त राजाओं, सामंतो तथा तांत्रिक–साधकों ने इनका स्वागत किया। दुलरा–दयाल के वापस आने पर जय सिंह के बहकावे में आकर रोसड़ा के राजा कन्दर्प देव काली पूजा के बहाने दुलरा–दयाल को बंदी बना लेता है।

बंदी अवस्था में दुलरा–दयाल को मारने के लिए ज्योंहि कन्दर्प हाथ उठाता है, हाथ उठता ही नहीं और छाती में दर्द से छटपटाने लगता है। कन्दर्प को अपनी गलती का एहसास होता है। मॉफी मांगने पर दुलरा–दयाल क्षमादान देकर पुनः भरौड़ा वापस आता है। सूखी कमला की धार को जन–कल्याण हेतु पुनर्जीवित करने का प्रयास करता है और इस प्रयास में उसे सफलता भी मिलती है। दुलरा–दयाल की लोक गाथा में भी श्रृंगार का पुट देखने को मिलता है। दयाल सिंह के रूप लावण्य को देख कुएँ पर पानी भरती बुढ़ी मुर्छित हो जाती है, वह दयाल सिंह से परिचय पूछती है।

फेकू राम लोक गाथा का नायक फेकू राम ही है। मनुष्य देवा के रूप में उनके शौर्य का वर्णन इस लोक गाथा में हुआ है। सात सौ बाघिन से लड़ते हुए छः सौ निन्यानवे को मारने के बाद अंतिम बाघिन (लुल्ही) से पराजित होता है। लुल्ही बाघिन उसका प्राणन्त कर देती है। फेकू राम के श्राद्ध कर्म में भोज के अवसर पर स्वयं मृतक फेकू राम की आत्मा पंचों के पतल पर भोजन परोसते हैं। प्रथम दृष्ट्या सभी पंच डर जाते हैं बाद में फेकू राम की दैवी शक्ति का अनुमान कर शांत हो जाते हैं।

मोती दाई निःसन्तान के कलंक के बोझ से जब दबी होती है तब उनमें आक्रोष फूटता है। वह आत्महत्या के उद्देष्य से तिलजुगा नदी को पारकर विजु बन में अपनी चिता बनाती है। चिता में आग लगाने को जब उद्धत होती है तभी उनकी आराध्य देवी गहिल प्रकट होती और उन्हे पुत्र होने की बरदान देती है। संकुचित शौर्य के बदौलत संतान की प्राप्ति में सफल होती है।

गरीबन भुइंयॉ मनुष्य देवा के रूप में आज भी पूजित है। जन सामान्य उसी की पूजा करता है जिसमें कभी शौर्य और सामर्थ्य रहा हो। गरीबन भुइंगयॉ भी शौर्य और सामर्थ्य से युक्त था। उघरा गॉव में बाध–बाधिन के षिकार के क्रम में गॉव के लोग असफल रहते हैं, पर गरीबन भूइंयॉ बाघ–बाघिन को मारने में तत्पर हो जाते है, लेकिन कमला जोगिन की दुष्ट स्वभाव के कारण वे मारे जाते हैं। षिकार के लिए जब गरीबन प्रस्थान करते हैं अपषकुन होता है, काला कौआ बोलने लगता है। पत्नी मना करती है। गरीबन कहता है तुम औरत की जाति हो, एक पक्षी के बोलने से डर गई। यहॉ गॉव की यहा गांव की इज्जत का सवाल है और इतना कहकर वे चल पड़ते है इस तरह गरीबन अपने शौर्य का इजहार करती है।

## संदर्भ

1. योगानन्द झा–लोक जीवन ओ लोक साहित्य, पृ0–64
2. डॉ0 महेन्द्र नारायण राम–कारिख लोकगााथा,पृ0–76, हीरा प्रकाषन, नील कमल कलाभवन अम्बेदकर नगर, खुटौना, मधुबनी,बिहार–2002

3. डॉ0 योगानन्द झा–लोक जीवन ओ लोकसाहित्य, पृ0–60
4. डॉ0 ब्रज किषोर वर्मा 'मणिपद्म'–मैथिली लोक गाथाक इतिहास, दक्षिण मिथिला, 1–15 फरवरी 2008
5. स्मारिका–मारवाड़ी महाविद्यालय, भागलपुर,मार्च 2009 पृ–47
6. राजेश्वर झा–लोकगाथाः निवेदन, पृ0–46, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना–1947
7. डॉ0 महेन्द्र नारायण राम–मैथिली लोकवृतः बिन्दुओ विस्तार पृ0–27
8. संपादक श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर'–मैथिली लोक साहित्य,पृ0–89
9. श्री राजेष्वर झा–लोक गाथाः विवेचन, पृ0–40,41
10. संत्यव्रत सिन्हा–भोजपुरी लोकगाथा पृ0–72, हिन्दुस्तान एकेडमी इलाहाबाद–1957
11. ब्रज किषोर वर्मा 'मणिपद्म'–लोरिक विजय पृ0–मणिकण मिथिला सांस्कृतिक परिषद् कलकत्ता–1996
12. यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद स्टडीज अंग्रेजी भाग–इन्ट्रोडक्षन टू दी फोक लिट्रेचर ऑफ मिथिला, पार्ट–01
13. डॉ0 राजेष्वर झा–लोकगाथाः विवेचन, पृ0–20
14. ब्रज किषोर वर्मा 'मणिद्म' – लवहरि–कुषहरि, पृ0–15
15. सत्य व्रत सिन्हा–भोजपुरी लोकगाथा – पृ0–62